ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र फरवरी 2018 (प्रथम)

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन विशेषांक

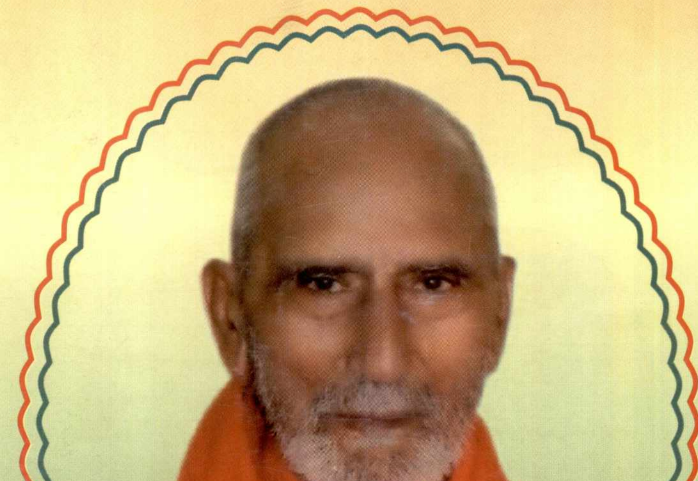

आचार्य बलदेव स्मृति दिवस (28 जनवरी 2018)

Email : aryapsharyana@yahoo.in Visit us : www.apsharyana.org

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के मुख्य वक्ता

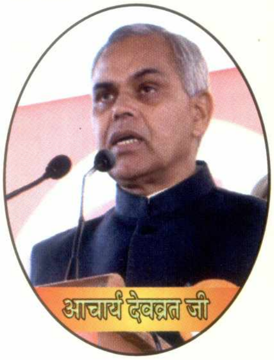
आचार्य देवव्रत जी

श्री गंगाप्रसाद जी

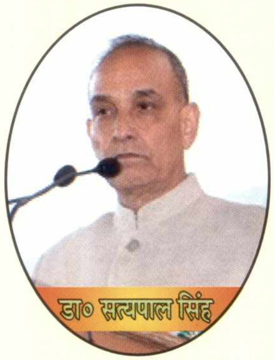
डा० सत्यपाल सिंह

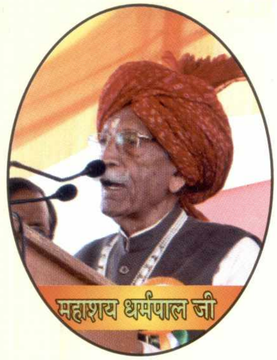
महाशय धर्मपाल जी

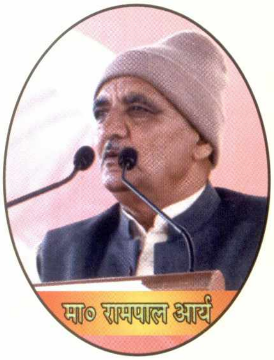
मा० रामपाल आर्य

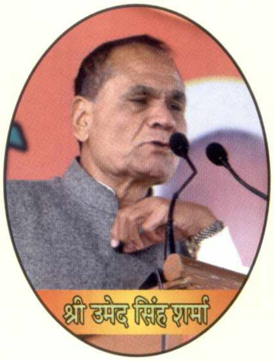
श्री उमेद सिंह शर्मा

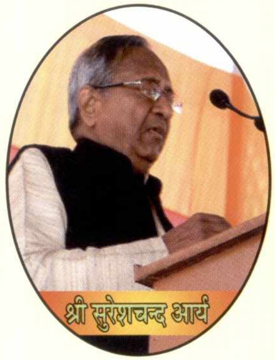
श्री सुरेशचन्द आर्य

श्री विनय आर्य

डा० प्रमोद योगार्थी

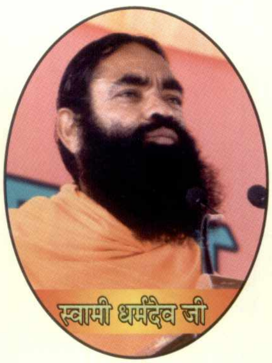
स्वामी धर्मदेव जी

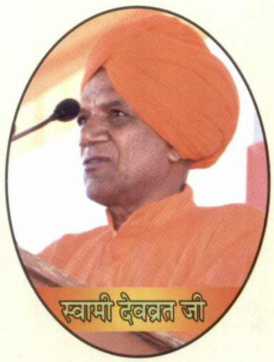
स्वामी देवव्रत जी

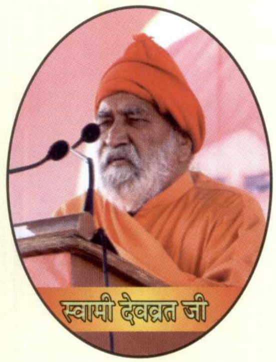
स्वामी देवव्रत जी

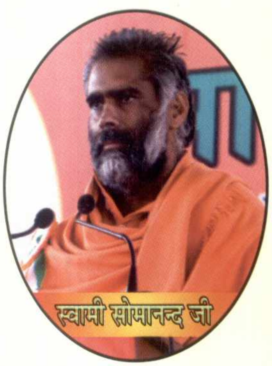
स्वामी सोमानन्द जी

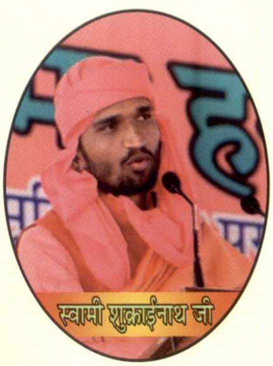
स्वामी शुक्राईनाथ जी

बहन सुमित्रा आर्या

बहन अंजली आर्या

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख-पत्रिका

वर्ष 13 अंक 24-25

सम्पादक :
उमेद शर्मा

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल

1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग

सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

॥ ओ३म् ॥

आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

जनवरी, 2018 (द्वितीय) एवं फरवरी 2018 (प्रथम)
16 जनवरी 2018 से 15 फरवरी 2018 तक
[संयुक्त-अंक]

इस अंक में....

9. प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का सफल समापन 2
1. एक महान् सन्त—आचार्य बलदेव जी महाराज 3
2. उनके दो सन्देश 5
3. मनुष्य योनि छोड़ते समय जीव की तीन गतियाँ 6
4. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी 7
5. आओ! मौत के रहस्य को समझें 8
6. नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की तथाकथित मृत्यु 9
7. अघमर्षण का अर्थ है पाप से डरकर पाप से दूर रहना 11
8. यह संसार नाशवान है या नाशरहित? 12
10. समाचार-प्रभाग 15

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
Website : www.apsharyana.org

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने मनाया आचार्य बलदेव जी का स्मृति दिवस

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का सफल समापन

आचार्य देवव्रत ने की प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को चार प्रचार रथ देने की घोषणा, वेदों के प्रचार का किया आह्वान।

नशे से बचाने के लिए युवाओं को आर्यसमाज से जोड़ना जरूरी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के तत्त्वावधान में दिनांक 28 जनवरी, 2018 को आयोजित आचार्य बलदेव स्मृति दिवस के अवसर पर प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि नशा देश के युवाओं को कमजोर बना रहा है। समाज आज अनेक कुरीतियों से ग्रस्त है। नए-नए पाखण्ड सामने आ रहे हैं। इससे बचने के लिए युवाओं को आर्यसमाज के साथ अधिक से अधिक संख्या में जोड़ना आवश्यक है। इसके लिए गांवों में भी प्रशिक्षण शिविर लगाए जायें।

उन्होंने अप्रैल के बाद दयानन्दमठ के लिए चार प्रचार रथ और दिए जाने की घोषणा भी की। आर्यसमाज के प्रचार व प्रसार की खातिर गुरुकुल कुरुक्षेत्र व आर्ष विद्यालय व भजनोपदेशक विद्यालय खोले गये हैं, जो कि निश्शुल्क हैं। उन्होंने कहा कि वेदों का सही मायनों में घर-घर तक प्रचार-प्रसार ही स्वामी ओमानन्द व आचार्य बलदेव के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पंचकूला में बनेगा आर्यसमाज का केंद्र

देश में आर्यसमाज का केन्द्र पंचकूला में बनेगा, जहां वेदों पर रिसर्च की जाएगी और समाज से कुरीतियों को दूर किया जाएगा। यह बात हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने रविवार को रोहतक में आयोजित प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में कही। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में उन्होंने जीरो बजट खेती का अभियान चलाया है, जिससे जनता को चौतरफा लाभ होगा। आचार्य बलदेव जी के स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में इस महासम्मेलन का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक की ओर किया गया जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से अनेक आर्य महानुभाव पहुँचे। कार्यक्रम का शुभारम्भ नौ बजे यज्ञ के साथ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा परोपकारिणी सभा अजमेर से आचार्य कर्मवीर रहें। इसके बाद आचार्य बलदेव जी को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम दोपहर बाद तक चला।

श्रद्धांजलि देने वालों में ये भी रहे मौजूद

आचार्य बलदेव जी के स्मृति दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि देने वालों में सुरेशचन्द्र आर्य, डॉ. सुरेन्द्र, ओममुनि, धर्मपाल आर्य, विनय आर्य, डॉ. धर्मदेव विद्यार्थी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, आचार्य अखिलेश्वर, डॉ. प्रमोद योगार्थी, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी देवव्रत, स्वामी धर्ममुनि, स्वामी विदेहयोगी, स्वामी बलेश्वरानन्द, स्वामी धर्मदेव, स्वामी विजयवेश, आचार्या दर्शना, आचार्या सुनीता, आचार्या अमरकौर, आचार्या चन्द्रकान्ता, आचार्या राजनमान, आचार्या मधुरलता, डॉ. कुलवीर छिक्कारा, योगेंद्र मलिक, प्रदीप जैन, राजकमल सहगल, श्री कन्हैयालाल, श्रीमती सुमित्रा आर्या, रमेश आर्य आदि शामिल रहे। वहीं अंजलि आर्या, कुलदीप भास्कर व सत्यपाल आर्य ने मधुर भजन प्रस्तुत किए।

पूरा करेंगे प्रचार का लक्ष्य

दयानन्दमठ रोहतक में स्वामी स्वतन्त्रानन्द बहुउद्देश्यीय सभागार में आयोजित महासम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मास्टर रामपाल आर्य ने कहा कि आचार्य बलदेव के अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए वेदप्रचार समिति व वेदप्रचार मण्डल का गठन किया गया है, जो गांवों और शहरों में वेदों का प्रचार कर रहे हैं। जबकि छह मास तक हरयाणा के प्रत्येक गांव में प्रचार का लक्ष्य पूरा कर लिया जाएगा। मंच का संचालन सभा के मंत्री उमेद शर्मा और आचार्य सर्वमित्र ने किया।

सादगी के मूर्ति थे आचार्य बलदेव

मेघालय के राज्यपाल श्री गंगाप्रसाद जी ने कहा कि आचार्य बलदेव न केवल आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में अग्रणी रहे, बल्कि वे सादगी के प्रतिमूर्ति थे। वह हम सब के लिए प्रेरणास्रोत बने रहेंगे। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द द्वारा रचित ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ने ही चमत्कारों को

क्रमशः पृष्ठ 13 पर......

एक महान् सन्त—आचार्य बलदेव जी महाराज

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्॥

इस परिवर्तनशील संसार में जो भी उत्पन्न हुआ है, वह ईश्वर की व्यवस्था से मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। यह क्रम सदा से चला आया है, चल रहा है तथा भविष्यत् में भी चलता रहेगा। सामान्य कोटि के व्यक्ति जन्म लेते रहते हैं और मरते रहते हैं, उनसे संसार में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। किन्तु जिस व्यक्ति के बिछुड़ने से समाज और देश की महान् क्षति हो जाये, ऐसे व्यक्ति का संसार से चले जाना असह्य होता है। ऐसे ही महापुरुषों में आचार्य बलदेव जी महाराज थे। इनके वियोग से कई गुरुकुल, कई आर्य संस्थायें, कई संगठन अनाथवत् हो गये हैं। इनके अभाव की पूर्ति निकट भविष्य में होनी अति कठिन है। वैसे तो किसी भी व्यक्ति के स्थान की पूर्ति कोई भी नहीं कर सकता। परन्तु तपस्वी, त्यागी, विद्वान्, परोपकारी व्यक्ति के अभाव की पूर्ति होनी सर्वथा असम्भव है। अस्तु!

दिनांक 28 जनवरी, 2016 को प्रातः 6.24 पर व्याकरण के सूर्य आचार्य बलदेव जी का स्वर्गवास हो गया। आचार्य बलदेव जी अपने परम शिष्य जयपाल के साथ गुरुकुल कालवा से रात 1.30 बजे दयानन्दमठ रोहतक के लिए चल पड़े। धुंध के कारण प्रातः चार बजे दयानन्दमठ पहुँचे। शौच आदि से निवृत्त होकर 4.15 पर सैर के लिए निकले। ठोकर लगकर गिरे जिससे उनके नाक, ढोडी व आँख पर चोट लगी और बनावटी दांत टूटकर मुंह के तलवे में घाव बनाया जिस कारण उनके तलवे में गहरा घाव हुआ। ज्यादा खून निकलने तथा खून का श्वास नली में चले जाने से देहान्त हो गया। जबकि मैडिकल हॉस्पीटल के डॉक्टरों ने उनका नाम सुनते ही भरसक प्रयास किया। तलवे में टांके लगे परन्तु उनके खून का रिसाव बन्द न होने के कारण डॉक्टरों का प्रयास असफल रहा।

आचार्य बलदेव जी का जन्म हरयाणा प्रान्त के सोनीपत जनपद के सरगथल ग्राम में 19 जनवरी 1931 ई० (माघ प्रतिपदा 1987 वि०सं०) को पिता श्री गूगनसिंह जी के घर में हुआ था। जाट कॉलेज रोहतक से एफ.एस.सी. कक्षा उत्तीर्ण करके बिजली विभाग में नौकरी कर ली। वहाँ इनसे कम शिक्षित सरदार इनके ऊपर नियुक्त था। उसका व्यवहार अशोभनीय था। सम्मानित व्यक्ति के लिए ऐसी विषम परिस्थिति में सर्विस करना कठिन हो जाता है अतः नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति आस्था तो पहले से ही थी। इसी कारण सर्विस करते-करते ही गुरुकुल झज्जर में आचार्य भगवान्देव जी के पास आना-जाना प्रारम्भ हो गया। आचार्य जी तो ऐसे श्रद्धालु युवकों को ढूंढ़ते ही रहते थे। फलतः वैराग्यवान् के संस्कार होने से तथा आचार्य जी के सत्संग से घर-बार त्यागकर आर्ष-शिक्षाप्रणाली से शिक्षा प्राप्त करने की भावना दृढ़तर होती चली गई और सब कुछ त्यागकर गुरुकुल झज्जर में पहुँच गये। वहाँ रहते हुए कई वर्ष तक डाकखाने में पोस्टमास्टर का कार्यभार संभाला। जो वेतन इस पद के लिए आता था, उसे भी गुरुकुल में ही प्रदान करते रहते थे। एक बार सरकारी नौकरी छोड़ दी तो पुनः वैतनिक रूप में उसे कभी स्वीकार नहीं किया।

गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करने में यह कठिनाई आने लगी कि पारिवारिक जनों का आवागमन प्रारम्भ हो गया। अतः आचार्य भगवान्देव जी ने इनको तथा ब्र० इन्द्रदेव (स्वामी इन्द्रवेश) को मैनपुरी जिले के गुरुकुल सिरसागंज में अध्ययन करने हेतु भेज दिया। वहाँ से शिक्षा प्राप्त करके आगे की उच्च शिक्षा हेतु बेरी में आकर पं० राजवीर शास्त्री से व्याकरण-महाभाष्य पढ़कर संस्कृत के उद्भट हो गये और सन् 1962 में गुरुकुल झज्जर में आकर मुख्याध्यापक का पद ग्रहण कर लिया।

अध्यापनकाल में काशिका और महाभाष्य का अध्यापन कराना आपकी विशेष रुचि का परिचायक रहा है। छात्रों को यह छूट थी कि व्याकरणविषयक कोई भी शंका कभी भी निवृत्त कराई जा सकती थी। गुरुकुल में सभी के

लिए यह आवश्यक नियम था कि सभी परस्पर संस्कृत में ही वार्तालाप करेंगे। इस नियम का आचार्य बलदेव जी ने कठोरता से पालन किया और इतने दृढ़ रहे कि कभी भूलवश हिन्दी में वाक्य बोल दिया तो उसके प्रायश्चित्तवश उस दिन भोजन भी नहीं करते थे। गुरुकुल के सभी विभागों की व्यवस्था की ओर ध्यान रखते थे। गोशाला के किसी कर्मचारी ने आलस्य-प्रमाद या रुग्णतावश गोबर नहीं उठाया तो आचार्य बलदेव जी उसे उठाने में भी संकोच नहीं करते थे।

शारीरिक तपस्या हेतु एक फुट चौड़ी मुंडेर पर गर्मी में रात को सोते थे। सर्दी में भी रजाई का प्रयोग नहीं किया, केवल एक सामान्य-सा कम्बल ओढ़ लेते थे। कई बार तो सर्दी में भी केवल एक चादर ही ओढे रहते थे। कुरता-चप्पल, जूता, खड़ाऊँ का भी प्रयोग नहीं किया। भोजन सर्वथा सादा करते थे, जैसे नमक, मिर्च, मसाले और मीठा तक का सेवन नहीं करते थे। इस प्रकार 1962 से मई 1971 तक लगातार गुरुकुल की सब प्रकार की सेवा करते रहे हैं। अप्रैल-मई की भयंकर तपन में भी नंगे पैर रहकर ग्रामों में घूम-घूमकर गुरुकुल हेतु अन्न-संग्रह किया करते थे। उत्सव आदि सार्वजनिक कार्यों में भी कभी भी आगे आकर सम्मान प्राप्त करने की भावना प्रदूशत नहीं की। स्वयं को सदा सेवक के रूप में प्रदूशत करते रहे हैं।

गुरुकुल कालवा में रहकर भी सैकड़ों छात्रों को पढ़ाकर विद्वान् बनाया। गुरुकुल झज्जर के 9 वर्ष के निवास काल में जिन विशेष विद्वानों को तैयार किया, उनकी संक्षिप्त नामावली इस प्रकार है-डॉ० धर्मवीर अजमेर प्रधान परोपकारिणी सभा, डॉ० योगानन्द शास्त्री, मन्त्री (दिल्ली सरकार), डॉ० सुरेन्द्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डॉ० रामवीर शास्त्री फरीदाबाद, डॉ० रघुवीर वेदालंकार दिल्ली, आचार्य दयानन्द कितलाना, स्वामी दिव्यानन्द हरिद्वार, स्वामी देवव्रत व्यायामाचार्य, स्वामी रामवेश जीन्द, स्वामी चन्द्रवेश टिटौली, विरजानन्द दैवकरणि गुरुकुल झज्जर, डॉ० विश्वपाल दाधिया, यज्ञवीर शास्त्री किसरैंटी, डॉ० यज्ञवीर दहिया, सत्यवीर शास्त्री नूनामाजरा, डॉ० कृष्णदेव सारस्वत उड़ीसा, डॉ० विक्रम कुमार विवेकी उड़ीसा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती दिल्ली, डॉ० महावीर अग्रवाल, कुलपति उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय हरिद्वार, स्वामी विवेकानन्द प्रभात आश्रम टीकरी, चन्द्रपाल शास्त्री पाकस्मा, डॉ० रणवीर शास्त्री आसन, डॉ० रणवीर शास्त्री उपनिदेशक हरियाणा राजकीय संग्रहालय चंडीगढ़, डॉ० राजकुमार उप शिक्षा निदेशक शिक्षा निदेशालय दिल्ली, डॉ० आनन्द कुमार गृहमंत्रालय भारत सरकार, आचार्य यशपाल हुमायूंपुर, स्वामी ओमानन्द योगतीर्थ, स्वामी सत्यवेश कालवा, स्वामी यज्ञानन्द, स्वामी वेदरक्षानन्द कालवा, स्वामी धर्ममुनि बहादुरगढ़, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढौत, रणवीर शास्त्री हुमायूंपुर, प्रियव्रत हुमायूंपुर, रणधीर शास्त्री पौली, राजवीर कुण्डल, राजेन्द्र सुनारिया, श्री सत्यव्रत शास्त्री मकड़ौली कलां, सत्यव्रत झोझूं, ओमप्रकाश दाधिया, डॉ० धर्मपाल लाढौत, आनन्ददेव शास्त्री खेड़ीजट्ट, राजवीर शास्त्री देवली, जयदेव शास्त्री, ओमप्रकाश शास्त्री दाधिया, जगवीर शास्त्री खरमाण, आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक, आचार्य इन्द्रपाल नैष्ठिक, वेदपाल एडवोकेट जयपुर, आचार्य बलवीर रोहतक, डॉ० रवीन्द्र मैसूर, डॉ० कुशलदेव महाराष्ट्र, डॉ० वीरदेव नेपाल, डॉ० सुरेन्द्र कुमार बादली, डॉ० वेदपाल बरहाणा, डॉ० सोमदेव मुम्बई, डॉ० प्रकाशचन्द्र मुम्बई, प्रिं० धर्मव्रत शास्त्री हड़ौदा, प्रिं० दयामित्र शास्त्री पौली, प्रिं० रणधीर लीलोढ़, महेन्द्रकुमार पिलखुआ मेरठ, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर आदि।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली

हरयाणा की समस्त आर्यसमाज एवं शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 25 से 28 अक्तूबर 2018 तक दिल्ली में होगा। आपसे अनुरोध है कि इन तारीखों में अपनी आर्यसमाज व शिक्षण संस्थाओं का वार्षिक उत्सव न रखें। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग देवें।

उमेद शर्मा
सभामन्त्री

रामपाल आर्य
सभाप्रधान

उनके दो सन्देश

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

आर्ष साहित्य पढ़ने वाले और साथ ही धर्मात्मा व्यक्ति के जो संदेश होते हैं वे सात्त्विक अनुभव के आलोक में बनने के कारण सार्थक होते हैं। आचार्य बलदेव जी

आर्षपाठविधि के धर्मात्मा विद्वान् होने के साथ-साथ तपस्वी भी थे। उनके अनेक छोटे-छोटे किन्तु बड़े लाभकारी सन्देशों को आज विद्वान् और उनके साथ रहने वाले कार्यकर्त्ता आज याद करते हैं। मुझे इस अवसर पर उनके दो सन्देश याद आ रहे हैं। वे अनेक बार कहते थे-**''जागू से लागू बड़ा होता है।''** आपने अनेक लोग ऐसे देखे होंगे जो मिलने पर आपको आर्यसमाज के प्रचार की बड़ी-बड़ी योजनाएं बताने लगेंगे। वर्षों तक ऐसे ही बातें करते मिलेंगे, लेकिन प्रचार का कार्य करते नहीं मिलेंगे। इस प्रकार कार्य करने वाला ही बड़ा होता है। शास्त्रों में भी उद्योगी मनुष्य को ही सफल माना है, उसी की प्रशंसा की जाती है। अनेक कहते रहे कि आचार्य बलदेव के पास **'योजना नहीं है'**, **'शैली'** दूसरी होनी चाहिए, आदि-आदि। लेकिन वे अपने उद्योग से बड़े बन गए, आगे निकल गए। अनेक लोग मैं ऐसे देखता था जो उनसे मिलते समय तरह-तरह की योजनाएं बताते तो उन्हें **'बहुत अच्छा'** कहकर फिर प्रचार के कार्य में लग जाते थे।

दूसरा उनका जो संक्षिप्त-सा उपदेश था, वह था, **'लगे रहो।'** प्रचार में व्यक्ति कम होते या अधिक वे लगातार कार्य करते रहते थे। कोई निराशाजनक बातें करता तो उसे यही सन्देश देते थे कि **'लगे रहो।'** स्वामी स्वतन्त्रानन्द जैसे तपस्वी साधुओं का यही तो आदर्श था। इसी आदर्श से ठोस कार्य होता है। जो कहते हैं कि इससे क्या होता है, ऐसे व्यक्तियों को उनके वे कार्य भी नहीं दिखाई दिए जब उजीना (मेवात) में लगभग 20,000 व्यक्तियों की उपस्थिति गोरक्षा हेतु हुई थी। रामपालदास के पाखण्ड को मिटाने के लिए इसी स्तर के बड़े-बड़े सम्मेलन, पंचायतें हुईं। उन्हीं की श्रेणी के साधु आर्यसमाज को जन आन्दोलन बनाने में सफल होते थे। खाली शोर मचाने से, ऐसे साधुओं की निन्दा उपहास करने से, अपनी अलग पहचान बनाने के प्रयास से कुछ दिन के होहल्ला और संगठन के छिन्न-भिन्न होने के सिवाय कुछ हाथ नहीं लगता। कभी आर्यसमाज में ऐसी घटनाओं को देखकर ही कवि 'सरशार' ने आर्यसमाज के इतिहास शिरोमणि श्रीयुत् राजेन्द्र 'जिज्ञासु' जी को कहा था-

हम जमीन को आसमां करेंगे, आसमां को जमीन करेंगे।
जो यह कह रहे हैं, वे काम कुछ भी नहीं करेंगे॥

उनकी एक और विशेषता थी कि वे आर्यसमाज के नेताओं के साथ बैठक मीटिंग तक सीमित रहते थे, बाकी समय कार्यकर्त्ताओं के साथ प्रचार में लगे रहते थे, स्वयं पर्चे बांटना, घोषणा करना, गांव-गांव चौपालों में स्वयं प्रचार के दौरान उपस्थित रहना। ये व अन्य ऐसी बातें थीं जो आचार्य बलदेव को सबसे अलग 'आचार्य' बनाती हैं। वे एक और गम्भीर बात यह कहते थे कि जब हम यह सोचते हैं कि हम दूसरे के लिए समाज का कार्य कर रहे हैं, तो हम लम्बे समय तक कार्य नहीं कर पाते। उनके कहने का यही भाव था कि ऐसे कार्य आत्मिक उन्नति, पुण्य के लिए किये जाते हैं। उन्हीं उदात्त भावनाओं के कारण उनकी श्रेणी के साधुओं से आपने यह उपालम्भ नहीं सुना होगा कि **''हमने घर छोड़ दिया, अब हम कहाँ जाए...।''** एक गाँव में प्रचार के दौरान जब लोग जुड़ नहीं रहे थे तो भजनीक ने माइक से कहा, **''इतना बड़ा साधु आपके गांव आया है, आप एकत्रित नहीं हो रहे, यह आपका दुर्भाग्य है।''** उन्होंने उसे तुरन्त रोक कर कहा कि **''ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।''** आज तो पग-पग पर ऐसे साधु आपको मिल जायेंगे जो बार-बार अपने घर छोड़ने की दुहाई के साथ-साथ उपालम्भ भी देते मिलेंगे। जन्म-जन्म के सिद्ध स्वभाव से ही आचार्य बलदेव की श्रेणी के साधु बनते हैं।

मनुष्य योनि छोड़ते समय जीव की तीन गतियाँ

❑ खुशहालचन्द्र आर्य

मनुष्य योनि को जब जीव शरीर छोड़कर किसी दूसरी योनि में जाता है, वह जीव की तीन गतियाँ होती हैं। वह जीव अपने कर्मानुसार किसी भी एक गति में जाता है। वे तीन गतियाँ इसी भांति थी-(1) मनुष्य योनि से मनुष्य योनि में जाना, (2) मनुष्य योनि से नीचे की योनियाँ, पशु-पक्षी, कीट-पतंगें व गन्दी नाली के कीड़े की योनि में जाना, (3) मनुष्य योनि से सीधा मोक्ष में जाना। इन तीनों गतियों का संक्षिप्त विवरण इसी भांति है।

1. मनुष्य से मनुष्य योनि में जाना-जब जीव मनुष्य योनि में रहता था, उस समय यदि उसने 50 प्रतिशत या इससे अधिक अच्छे या शुभकर्म किये होंगे तो उसको अगली योनि में मनुष्य की ही मिलेगी। इसमें अन्तर यह रहेगा कि वह मनुष्य में जितने-जितने अच्छे व शुभकर्म अधिक करेगा, उस जीव को अगली मनुष्य योनि उतनी ही अच्छी मिलती जायेगी। यानि वह जीव अपनी पहली मनुष्य योनि में 50 से 60 प्रतिशत अच्छे कर्म किये हैं, तो उसको अगली मनुष्य योनि साधारण स्तर की मिलेगी। यदि वह 60 से 70 प्रतिशत अच्छे कर्म किये हैं तो मनुष्य योनि का और अच्छा स्तर मिलेगा। यदि उस जीव ने 70 से 80 प्रतिशत अच्छे कर्म किये हैं किसी अच्छे साहूकार या किसी अच्छे शिक्षित माता-पिता के घर जन्म होगा और यदि 80 से 90 प्रतिशत अच्छे कर्म किये हैं तो किसी बड़े साहूकार या किसी अच्छे एम.पी. या मन्त्री के घर जन्म होगा। यदि 90 प्रतिशत से अधिक अच्छे कर्म किए हैं तो किसी राजा या प्रधानमंत्री के घर जन्म होगा। इस प्रकार जितने अच्छे कर्म अधिक होते जायेंगे इतना ही अगले जन्म का स्तर बढ़ता जायेगा।

2. मनुष्य से नीचे की योनियों में जाना-यदि मनुष्य योनि में जीव 50 प्रतिशत से कम अच्छे या शुभकर्म किये यानि बुरे कर्म 50 प्रतिशत से अधिक किये तो उसे क्रमशः नीची योनियाँ मिलती जायेंगी। यानि यदि 50 से 60 प्रतिशत बुरे कर्म करता है तो उसे पशु की योनि गाय, घोड़ा, हाथी आदि मिलेगी। यदि 60 से 70 प्रतिशत बुरे कर्म करता है तो पशु में ही नीच के स्तर के पशु गधा या सूअर आदि की मिलेगी और अधिक बुरे कर्म करता है तो पक्षी की योनि मिलेगी और अधिक बुरे कर्म करेगा तो कीट-पतंग की योनि मिलेगी। यदि और अधिक बुरे कर्म करेगा तो गन्दी नाली के कीटाणुओं की योनि मिलेगी। इस प्रकार योनि का स्तर घटता जाएगा।

3. मनुष्य योनि से सीधा मोक्ष में जाना-जो जीव मनुष्य योनि में 100 प्रतिशत अच्छे व शुभकर्म करेगा वह जीव मनुष्य शरीर छोड़ने के बाद सीधा मोक्ष में चला जाएगा और मोक्ष में ईश्वर के सान्निध्य में रहता हुआ परम आनन्द को प्राप्त करता रहेगा। पहले यह धारणा थी कि मोक्ष प्राप्त करने के बाद जीव हमेशा के लिए मोक्ष में रहेगा यानि आवागमन के बन्धन में नहीं आवेगा। इसका तात्पर्य है कि जन्म-मरण के बन्धन से छूट जाएगा। परन्तु महर्षि दयानन्द की एक यह सही देन है कि उन्होंने वेदों के आधार पर मोक्ष की भी अवधि 31 नील 10 खरब 40 अरब बताई है। महर्षि ने कहा कि मोक्ष, अच्छे कर्मों का फल है। यदि अच्छे कर्म करने की अवधि है तो उसके फल की अवधि भी निश्चित ही होगी। चाहे वह कितनी भी लम्बी हो।

दूसरा मोक्ष की अवधि होने का कारण यह है कि यदि मोक्ष की अवधि न हो तो जीव मोक्ष में जावेगा और आवेगा नहीं तो एक दिन ऐसा आवेगा कि सभी जीव मोक्ष में चले जायेंगे और सृष्टि समाप्त हो जावेगी, परन्तु सृष्टि हमेशा बनती-बिगड़ती रहती है इसलिए मोक्ष की अवधि मानना अति आवश्यक है। अब प्रश्न उठता है कि मनुष्य एक अल्पज्ञ जीव है, उससे पूरे जीवन में कोई भूल या गलती न हो यह असम्भव है। कोई न कोई भूल या गलती हो ही जाती है। इसलिए 100 प्रतिशत अच्छे शुभ काम करना किसी के लिए सम्भव नहीं है। इसलिए 100 प्रतिशत का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में जो भी कार्य करता है वह परोपकार की दृष्टि से करता है। यहाँ तक कि वह खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना नित्यकर्म भी इसी भावना से करता है कि मैं अधिक जीवित रहकर मानवमात्र की ही नहीं बल्कि प्राणिमात्र की अधिक सेवा व

क्रमशः पृष्ठ 14 पर......

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

एकादश समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

गतांक से आगे....

प्रश्न 750. आग्नेयास्त्र, वारुणास्त्र, नागपाश, मोहनास्त्र, पाशुपतास्त्र क्या हैं?

उत्तर-जैसे कोई एक लोहे का बाण वा गोला बनाकर

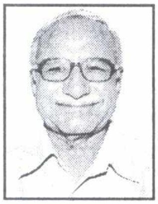

उसमें ऐसे पदार्थ रखे कि जो अग्नि के लगाने से वायु में धुआं फैलने और सूर्य की किरण वा वायु के स्पर्श होने से अग्नि जल उठे, इसी का नाम 'आग्नेयास्त्र' है। जब दूसरा इसका निवारण करना चाहे तो उसी पर 'वारणास्त्र' छोड़ दे। अर्थात् जैसे शत्रु ने शत्रु की सेवा पर आग्नेयास्त्र छोड़कर नष्ट करना चाहा, वैसे ही अपनी सेना की रक्षार्थ सेनापति वारुणास्त्र से आग्नेयास्त्र का निवारण करे। वह ऐसे द्रव्यों के योग से होता है, जिनका धुआं वायु से स्पर्श होते ही बादल होके झट वर्षने लग जावे, अग्नि को बुझा देवे। ऐसे ही 'नागपाश' अर्थात् जो शत्रु पर छोड़ने से उसके अंगों को जकड़कर बांध लेता है। वैसे ही एक 'मोहनास्त्र' अर्थात् जिसमें नशे की चीज डालने से जिसके धुएं के लगने से सब शत्रु की सेना 'निद्रास्त्र' अर्थात् मूर्छित हो जाए। इसी प्रकार सब शस्त्रास्त्र होते थे और एक तार से वा शीशे से अथवा किसी और पदार्थ से विद्युत् उत्पन्न करके शत्रुओं का नाश करते थे, उसको भी 'आग्नेयास्त्र' तथा 'पाशुपतास्त्र' कहते हैं।

प्रश्न 751. क्या 'तोप' और 'बन्दूक' उस समय में थीं?

उत्तर-'तोप' और 'बन्दूक' ये नाम अन्य देशभाषा के हैं, संस्कृत और आर्यावर्तीय भाषा के नहीं। किन्तु जिसको विदेशी जन 'तोप' कहते हैं, संस्कृत और आर्यभाषा में उसका नाम 'शतघ्नी' और जिसको 'बन्दूक' कहते हैं, उसको संस्कृत और आर्यभाषा में 'भुशुण्डी' कहते हैं। जो संस्कृत विद्या को नहीं पढ़े और इस देश की भाषा को भी ठीक-ठाक नहीं जानते, वे भ्रम में पड़कर कुछ-का-कुछ लिखते और कुछ-का-कुछ बकते हैं। उसका बुद्धिमान् लोग प्रमाण नहीं कर सकते और जितनी विद्या भूगोल में फैली है, वह सब आर्यावर्त देश से मिश्रवालों, उनसे यूनानी, उनसे रूम, और उनसे यूरोप देश में, उनसे अमेरिका आदि देशों में फैली है।

प्रश्न 752. क्या वे आग्नेयास्त्रादि शस्त्र मन्त्रों से सिद्ध होते थे?

उत्तर-नहीं, ये सब बातें, जिनसे अस्त्र-शस्त्रों को सिद्ध करते थे, वे 'मन्त्र' अर्थात् विचार से सिद्ध करते और चलाते थे। और जो 'मन्त्र' अर्थात् शब्दमय होता है, उससे कोई द्रव्य उत्पन्न नहीं होता। और जो कोई कहे कि मन्त्र से अग्नि उत्पन्न होता है तो वह मन्त्र के जाप करने वाले के हृदय और जिह्वा को भस्म कर देवे। मारने जाये शत्रु को और मर रहे आप। इसलिए मन्त्र नाम है विचार का, जैसा 'राजमन्त्री' अर्थात् राजकर्मों का विचार करने वाला कहाता है, वैसा 'मन्त्र' अर्थात् विचार से सब सृष्टि के पदार्थों का प्रथम ज्ञान और पश्चात् क्रिया करने से अनेक प्रकार के पदार्थ क्रिया कौशल उत्पन्न होते हैं।

प्रश्न 753. संस्कृत विद्या का प्रचार कहाँ अधिक है? कुछ उदाहरण दें।

उत्तर-अब तक जितना प्रचार संस्कृत विद्या का आर्यावर्त देश में है उतना किसी अन्य देश में नहीं। जो लोग कहते हैं कि जर्मनी देश में संस्कृत विद्या का बहुत प्रचार है और जितना संस्कृत मोक्षमूलर साहब पढ़े हैं उतना कोई नहीं पढ़ा-यह बात कहने मात्र की है। जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता, उस देश में एरण्ड ही को बड़ा वृक्ष मान लेते हैं। वैसे ही यूरोप देश में संस्कृत विद्या का प्रचार न होने से जर्मन लोगों और मोक्षमूलर साहब ने थोड़ा-सा पढ़ा, वही उस देश के लिए अधिक है। परन्तु आर्यावर्त देश की ओर देखें तो उनकी बहुत न्यून गणना है। मोक्षमूलर साहब के संस्कृत-साहित्य और थोड़ी-सी वेद की व्याख्या देखकर मुझको विदित होता है कि मोक्षमूलर साहब ने इधर-उधर आर्यावर्तीय लोगों की की हुई टीका देखकर कुछ-कुछ यथा-तथा लिखा है।

क्रमशः अगले अंक में......

आओ! मौत के रहस्य को समझें

❑ भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

प्रिय पाठको! प्राय: पत्रिका के प्रत्येक अंक में हम किसी न किसी का संवेदना भरा शोक समाचार पढ़ते हैं। इस पर जब हम गहराई से विचार करते हैं, तो स्पष्ट होता

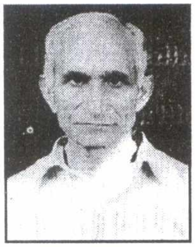

है कि उसका भी वह जीवन हमारी तरह ही शरीर-इन्द्रिय-मन और आत्मा का मेल रूप ही था। इन सबका जब मेल होता है उसी का ही नाम जन्म, जीवन है। सभी की आत्मा का अपने शरीर आदि से मेल ईश्वर की व्यवस्था से अपने-अपने कर्मों के अनुसार ही होता है। सबकी चेतन आत्मा जहाँ अजर-अमर है और मन-इन्द्रिय सूक्ष्म तथा शक्ति रूप में है, वहाँ शरीर पाँच भौतिक है, जो कि पृथिवी-जल-अग्नि-वायु-आकाश से बना हुआ होने के कारण परिवर्तनशील है। ऐसे ही दुनिया की बर्ते जाने वाली हर वस्तु में भी अपने-अपने भूतों (मूलरूप) के अनुपात के अनुरूप परिवर्तन, विकार आता रहता है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु एक दिन हमारी आंखों से ओझल हो जाती है, जिसको किसी की मौत कहा जाता है। कई बार दुर्घटना, रोग, बदले की कारवाई आदि के कारण भी जीण-शीर्ण होने से पहले भी आत्मा अपने शरीर आदि से अलग हो जाती है और इसका नाम भी मृत्यु, देहान्त, प्राणान्त, बिछुड़ना, चल बसना आदि होता है।

शोकभरी संवेदना के इस अवसर पर अनेकों के मन में अनेक तरह की भावनायें, बातें उभरती हैं। उन सबको सामने रखकर यजुर्वेद (12.79) के मन्त्र **अश्वत्थे वो निषदनम्**-में कहा है-दुनिया की दुनियावी चीजों को वर्तने वालो! तुम्हारे द्वारा वर्ताव में आने वाली खाने-पीने-पहनने जैसी सारी चीजें पांच भौतिक होने से अपनी-अपनी परिवर्तनशीलता के कारण एक दिन अपना काम करना बन्द कर देती हैं। हाँ, उपयोग में आने वाली भौतिक वस्तुएं ही नहीं, अपितु हमारा यह पांच भौतिक देह भी एक दिन पत्ते की तरह नीचे पड़ा दिखाई देता है। तभी तो आगे मन्त्र में कहा है-**पर्णे वो वसतिष्कृता** अर्थात् तुम्हारा पत्ते जैसे देह में वसेरा है। तभी तो एक दिन पत्ते की तरह किसी का तन डाल से बिछुड़ा दिखाई देता है। अत: **गोभाज इत् किलासथ** अर्थात् हमारे शास्त्र पशुविशेष को जहाँ गौ कहते हैं, वहाँ हमारी आँख आदि इन्द्रियों, पृथिवी, सूर्य, उसकी किरणों, चन्द्र और सब की बुद्धि=समझ का नाम भी गौ है।

अत: इस गौरूपी अनोखी सम्पत्ति वालो! ऐसी सम्पत्ति युक्त मानवदेह में तुम्हें एक दुर्लभ अवसर मिला है। इसलिए अपने आपे के सभी तत्त्वों अर्थात् शरीर-इन्द्रिय-मन-आत्मा का पूर्ण विकास कर पूर्णता प्राप्त करो जिससे बाद में पछतावा न हो कि हमने इस-इस का अभी कोई विकास ही नहीं किया। फिर इस-इस का लाभ कैसे मिल सकेगा? अत: मन्त्र का सन्देश है-**यत् सनथ पूरुषम्।**

इस समय शरीर-इन्द्रिय-मन-आत्मा का मेल रूप ही अपना आपा है। तभी तो कठ उपनिषद् के ऋषि ने कहा है-**आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिण:** (3.4) और उसी का ही समर्थन चरक (सूत्र 1.42) में भी है। इन सब के मेल से ही हमारे संसारी और आध्यात्मिक कार्य सिरे चढ़ते हैं अर्थात् हमारा हर कार्य आत्मा और शरीर आदि के मेल से ही होता है। अत: किसी के जीवन की पूर्णता और जीवन के हर क्षेत्र की सफलता इनके मेल के विकास पर ही निर्भर है। इन सभी के निखार को ध्यान में रखकर मनुस्मृति में कहा है-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मन: सत्येन शुध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥ (5.109)

इसीलिए हम देखते हैं कि किसी का शरीर जितना स्वस्थ, मन सन्तुष्ट, बुद्धि प्रवीण और आत्मा आत्मिक बल से सम्पन्न होती है वह उतना ही अधिक संसारी जीवन में सफल तथा धार्मिक क्षेत्र में भी सार्थक सिद्ध होता है।

हां, आयुर्वेद के मान्य ग्रन्थ चरक में आयु-जीवित-नित्यग-अनुबन्ध शब्दों को एक ही बात को कहने वाले पर्यायवाची माना है। इन शब्दों की गहराई में जाने पर जीवन का एक विस्तृत रूप हमारे सामने आ जाता है। अत: जीवन की पूर्णता के लिए हमें इन सभी पहलुओं पर पूरा ध्यान देना चाहिए।

क्रमश: पृष्ठ 14 पर.....

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में डा० कुलवीर छिक्कारा को सम्मानित करते हुए आचार्य देवव्रत जी, श्री गंगाप्रसाद जी, डा० सत्यपाल सिंह व मा० रामपाल आर्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञमान को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री विनय आर्य को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री धर्मपाल आर्य को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री गंगाप्रसाद जी को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में डा० आर. एस. सांगवान को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारीगण।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य राजमान आर्या को सम्मानित करते हुए बहन सुमित्रा आर्या।

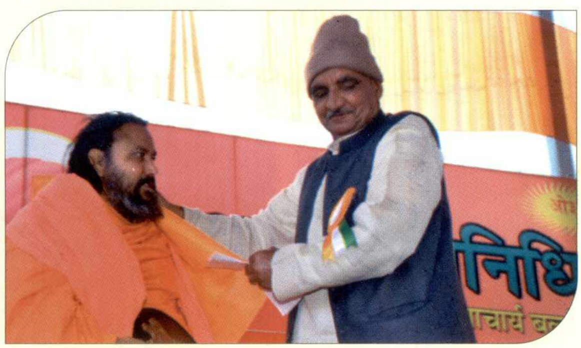

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में स्वामी सुखानन्द जी को सम्मानित करते हुए मा० रामपाल आर्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में यज्ञ करते हुए आचार्य कर्मवीर जी एवं आर्यजन।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मंच की तरफ जाते हुए आचार्य देवव्रत जी एवं श्री गंगाप्रसाद जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मंच की तरफ जाते हुए महाशय धर्मपाल जी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मंच की तरफ जाते हुए डा० सत्यपाल सिंह व डा० कुलबीर छिक्कारा।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में आचार्य देवव्रत जी को सम्मानित करते हुए श्री गंगाप्रसाद, डा० सत्यपाल सिंह व सभा के पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री गंगाप्रसाद जी को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में डा० सत्यपाल सिंह को सम्मानित करते हुए सभा के पदाधिकारी।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल जी को सम्मानित करते हुए आचार्य देवव्रत जी, श्री गंगाप्रसाद जी, डा० सत्यपाल सिंह व सभा के पदाधिकारी।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पधारने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आपका हार्दिक स्वाग

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की तथाकथित मृत्यु

❑ आनन्ददेव शास्त्री (पूर्व प्रवक्ता संस्कृत) दिल्ली सरकार

18 अगस्त 1945 को ताईहोकू (तैहाकू) हवाई अड्डे पर, विमान दुर्घटना में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की मृत्यु हुई थी। इस बात पर भारत के अधिकतर लोगों ने विश्वास नहीं किया। अत: नेताजी के अनुयायियों ने निश्चय किया कि एक गैर सरकारी कमेटी इस बात की जांच के लिए नियुक्त की जावे, जिसके अध्यक्ष नेताजी के बड़े भाई सुरेश बोस हों। किन्तु तभी नेहरू जी ने लोकसभा में घोषणा की कि कैप्टन शाहनवाज खां की अध्यक्षता में एक जांच कमेटी नेताजी की मृत्यु के बारे में जांच करने के लिये नियुक्त कर दी गई है।

इस कमेटी में तीन सदस्य थे। 1. कैप्टन शाहनवाज खां, 2. श्री एस.एन. मित्रा, 3. श्री सुरेश बोस। इस कमेटी के दो सदस्य श्री शाहनवाज खां तथा श्री एस.एन. मित्रा का मत था कि नेताजी की मृत्यु विमान दुर्घटना में हुई थी तथा श्री सुरेश बोस का मत था कि विमान दुर्घटना का कोई भी प्रमाण नहीं है। अत: नेताजी की मृत्यु विमान दुर्घटना में नहीं हुई। यह कहानी जापानियों द्वारा गढ़ी गई है।

नेताजी ने रूसी राजदूत तथा अपने साधनों से रूस से सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयत्न किया था जो कि असफल रहा। उस समय रूस की सेनायें मंचूरिया के पास ही लड़ रही थीं। मंचूरिया पर उनका अधिकार नहीं हुआ था। अत: नेताजी ने गुप्त रूप से मंचूरिया जाने का विचार बनाया जिससे वहां भूमिगत रहते हुए स्वतन्त्रता का युद्ध लड़ा जा सके।

जब जापान ने मित्र राष्ट्रों के सामने आत्मसमर्पण कर दिया तब नेताजी 'सेगांव' में थे। उन्होंने जापानी सेनाधिकारियों से विचार विमर्श किया। तब जापानी सेनाधिकारियों ने नेताजी को गुप्तरूप से मंचूरिया भेजने की योजना बनाई। नेताजी सेगांव से तैहोकू हवाई अड्डे पर उतरे तथा वहां से गुप्तरूप से मंचूरिया चले गये। क्योंकि अधिकारी तथा नेता चाहते थे कि नेताजी नहीं पकड़े जायें तथा जापान पर भी आंच न आए। अत: योजनाबद्ध तरीके से विमान दुर्घटना का प्रचार किया गया। पुनरपि ब्रिटेन तथा अमरीका की जांच एजेंसियों ने इस दुर्घटना को झूठा माना था।

नेताजी ने अपने साथ चलने के लिए-1. कर्नल हबीबुर्रहमान, 2. मेजर आबिद हुसैन, 3. कर्नल प्रीतम सिंह, 4. कर्नल गुलजारा सिंह, 5 श्री देवनाथ दास, 6. श्री एस.ए.अय्यर। किन्तु ठीक चलने के समय विमान प्राप्त न होने के कारण केवल हबीबुर्रहमान ही नेताजी के साथ चल सके। शेष लोग सेगांव ही रह गये।

नेताजी तथा कर्नल हबीबुर्रहमान विमास से टोकियो के लिए चले। कहा जाता है कि यह विमान (तैहोकू) हवाई अड्डे पर दुर्घटना ग्रस्त हो गया। नेताजी जल गये और चल बसे। कर्नल हबीबुर्रहमान बच गया। इसी कर्नल ने शाहनवाज कमेटी के सामने बयान दिये, जो विरोधाभास पूर्ण हैं। अन्य गवाहों के बयान भी एक दूसरे से मेल नहीं खाते। अत: सुरेश बोध ने इस दुर्घटना को मनघडन्त तथा असत्य बताया।

1. इस शाहनवाज खां की रिपोर्ट में भयंकर विरोधाभास है। इसमें पृष्ठ 19 पर लिखा है–'जहाज रनवे के समीप समतल भूमि पर गिरा, जबकि साथ लगाये फोटो में जहाज पहाड़ी पर गिरा हुआ है, जो कि पृष्ठ 71 पर है।'

2. कर्नल हबीबुर्रहमान के अनुसार जहाज जब पृथ्वी पर गिरा, उसमें आग लग गई। मैं तथा नेताजी अगले गेट से निकले। जब मैंने नेताजी को देखा तो वे मेरे से दस गज आगे खड़े थे। वे मेरे से विरुद्ध दिशा में देख रहे थे। उनके शरीर में आग लगी हुई थी। मुझे उनकी बुशर्ट उतारने में बड़ी कठिनाई हुई। पतलून में आग लगी थी। वे ऊनी स्वेटर नहीं पहनते थे। उन्होंने खाकी ड्रिल पहनी थी। मैंने उन्हें जमीन पर लिटा दिया। उनके सिर में एक बड़ा घाव था। चेहरा तथा बाल जल गये थे। मैंने उनके घाव से खून को रोका। इस काम में मेरे भी हाथ जल गये। मेरे कपड़ों में आग नहीं लगी थी।

3. दूसरे गवाह लेफ्टिनेंट 'सेकोई' तथा कैप्टेन 'अराई' ने बताया कि जहाज के गिरने के तुरन्त बाद उन्होंने नेताजी को नहीं देखा। कैप्टन अराई ने बताया–'जब मैंने नेताजी को देखा तो वे जहाज के बाईं ओर जहाज पर खड़े थे।

उनके कपड़ों में आग लगी हुई थी। उनके सहायक उनका कोट उतारने का प्रयत्न कर रहे थे। उनका ऊनी स्वेटर बड़ी कठिनाई से उतरा, क्योंकि वह पेट्रोल में भीगा हुआ था।'

4. मेजर कोनी का बयान था कि 'नेताजी को मैंने जहाज के बहुत समीप देखा। उनका मुंह जहाज से दूसरी तरफ था। वे सर्वथा मग्न थे, केवल जूते पहने हुए थे। उनके शरीर पर कोई आग नहीं लगी थी। उनको कोई कष्ट न था। उसके बाद कर्नल हबीबुर्रहमान उन्हें जहाज से दूर ले गये।'

5. मेजर 'तकाटासी' ने बताया कि 'मैंने नेताजी को जहाज के सामने से निकलता देखा। उनके कपड़ों में आग लग गई थी। नेताजी अपने कोट को उतारने की कोशिश कर रहे थे। मेजर नेताजी के पास गया, उसने नेताजी को जमीन पर लिटाया तथा कपड़ों की आग बुझाई। कर्नल हबीबुर्रहमान ने आग बुझाने में कोई सहायता नहीं की। नेताजी पर पेट्रोल मामूली ही पड़ा था।'

6. इंजीनियर 'नगामारू' ने बयान दिया कि नेताजी के कपड़े पेट्रोल से भीग गये थे।

7. घायल नेताजी की अस्पताल में चिकित्सा करने वाले डाक्टर टी. योशमी थे। इस डॉक्टर का बयान था कि 'नेताजी जल गये थे, परन्तु उनके सिर में चोट नहीं थी। रात्रि आठ बजे 18.8.1945 को उनकी मृत्यु हो गई। नेताजी की मृत्यु 18 अगस्त को बताई जाती है, परन्तु आजाद हिन्द सरकार को इसकी सूचना 20-21 अगस्त तक नहीं दी गई। 22 अगस्त को टोकियो रेडियो ने यह खबर दी।'

8. श्री देवनाथ दास उन छः व्यक्तियों में से एक थे, जिन्हें नेताजी अपने साथ ले जाना चाहते थे। श्री दास के सामने एक जापानी अधिकारी ने हनोई में कहा, 'हवाई जहाज की दुर्घटना तथा नेताजी की मृत्यु एक कहानी मात्र है। आप इस पर विश्वास न करें।'

9. नेताजी यदि मर गए थे फिर भी जापानियों ने उनका कोई फोटो नहीं लिया। केवल एक फोटो उन्होंने कर्नल हबीबुर्रहमान को दिया था, जिसमें नेताजी का शरीर न होकर एक सफेद कपड़े की गठड़ी मात्र थी। फोटो न लेने का कारण पूछने पर जापानियों ने कहा, 'हमने नेताजी का फोटो इसलिए नहीं लेने दिया, क्योंकि नेताजी का चेहरा विकृत हो गया था।'

10. कर्नल हबीबुर्रहमान अपने साथ एक घड़ी लाये थे, जिसे वे नेताजी की बताते थे। यह घड़ी चौकोर थी, जबकि नेताजी सदा गोल घड़ी ही बांधते थे। कर्नल हबीबुर्रहमान का कहना था कि यह घड़ी नेताजी की चिकित्सा करने वाले डॉक्टर 'याशिमी' ने दी थी। तब शाहनवाज कमेटी से डॉ. 'याशिमी' से पूछा तो उन्होंने कहा कि मैंने कर्नल हबीबुर्रहमान को कोई घड़ी नहीं दी। नेताजी के नौकर कुन्दनसिंह ने भी बयान दिया कि नेताजी 17 अगस्त 1945 तक भी गोल घड़ी ही बांधे हुए थे।

11. नेताजी के अन्तिम संस्कार के विषय में बयानों में अन्तर है। कर्नल हबीबुर्रहमान ने कमेटी के सामने 20 अगस्त तिथि बताई तथा बाद में लिखित बयान में 22 अगस्त बताई।

12. नेताजी की भस्सी कब ले जाई गई इस पर भी बयान में भेद है–

(1) हबीबुर्रहमान के अनुसार भस्म लेकर पार्टी 5 सितम्बर को मालगाड़ी से चली तथा छः सितम्बर को प्रातः टोकियो पहुँची।

(2) लेप्टिनेंट कर्नल 'सकाई' के अनुसार वे छः सितम्बर को प्रातः चलकर इसी दिन शाम को टोकियो पहुँचे।

(3) लेप्टिनेंट 'हयाशिदा' के अनुसार वे छः सितम्बर को सायं 3 बजे चलकर सात दितम्बर को सायं छः बजे टोकियो पहुँचे। नेताजी की विमान दुर्घटना को ब्रिटिश सरकार तथा तत्कालीन भारत सरकार ने भी ठीक नहीं माना तथा एच.के. राय तथा के.पी. डे नामक दो पुलिस अधिकारियों को नेताजी को गिरफ्तार करने को भेजा, परन्तु वे नेताजी को नहीं पकड़ सके।

कर्नल हबीबुर्रहमान के बयानों में अन्तर–

(1) जापानी अधिकारियों की पूछताछ में कर्नल हबीबुर्रहमान ने कहा–'जहाज अधिक ऊँचा नहीं उठ पाया तथा घूम करके रनवे साथ गिरा तथा आग लग गई, मुझे नहीं पता सुभाष बाबू जहांज में से स्वयं निकले या निकाले गये। मेरा कोट जल रहा था। मैंने कोट उतारा। नेताजी जहाज के पास लेटे हुए थे। उनके कपड़े जल रहे थे। बाद में ज्ञात हुआ कि नेताजी के सिर तथा गर्दन में गहरे घाव हैं।'

क्रमशः अगले अंक में......

अघमर्षण का अर्थ है पाप से डर कर पाप से दूर रहना

❑ सूबेदार करतारसिंह आर्य, सेवक आर्यसमाज गोहानामण्डी (सोनीपत)

मनुष्य कितना ही यत्न करे और निश्चय करे कि मैं अब पाप नहीं करूँगा, परन्तु ये इन्द्रियाँ विषयों के सामने आने पर उनमें प्रवृत्त हो ही जाती हैं। ऋषियों ने इसकी एक अचूक औषध बताई है–

न तथैतानि शक्यन्ते संनियन्तुमसेवया।
विषयेशु प्रजुष्टानि यथा ज्ञानेन नित्यश:॥ (मनु० 2.96)

अर्थात् विषयों को छोड़ देने से भी इन्द्रियाँ पाप से निवृत्त हो जाती हैं, परन्तु विषय सामने आने पर विषयों में प्रवृत्त हो जायेंगी, अत: सबसे अच्छा उपाय यह है कि बुद्धि को समझावें–

क) इन पाप कर्मों में क्या रखा है?

ख) तू विश्वास कर कि इस सृष्टि को बनाने वाला कोई है, उसकी सृष्टि में पाप करके तू बच नहीं सकता।

ग) पदार्थों की प्राप्ति के लिए तू पाप करता है, यदि इन पदार्थों के निर्माण करने वाले का तू विश्वास प्राप्त कर ले तो तुझे किसी पदार्थ की स्वयं ही कमी नहीं रहेगी।

घ) जिसने इस सृष्टि को रच के तुझे रचा है वह तेरे भरण-पोषण की चिन्ता स्वयं करेगा। उसके लिए पाप मत कर।

ङ) सृष्टि का निर्माण करके वेद (नियमशास्त्र) का भी अपने साथ में निर्माण किया है उसके अनुसार चलने में ही कुशल है।

च) उसके संकेत से सृष्टि होती है और उसी के संकेत से प्रलय होता है।

छ) समस्त विश्व उसके वश में है तू एक कीट के समान क्या वस्तु है?

ज) देख! यह सूर्य, चन्द्र, तारे, आकाश, पाताल सब उसी के रचे हैं।

झ) इन लोकों में जो सुख है, उसका भी निर्माता वही प्रभु है, उसके साथ सम्बन्ध करने पर सब कुछ प्राप्त होगा।

ञ) प्रभु भक्ति से सब कुछ मिल सकता है, क्यों लोभ में पड़कर पाप करता है। डर उस नियन्ता से, प्रार्थना कर उस दाता से, प्राप्त कर सब कुछ उससे।

इस प्रकार समझकर मनुष्य पाप से निवृत्त हो सकता है। बुद्धि को समझाओ, यही उपाय पाप से निवृत्ति का है। जब समझ में आ जाता है कि इन पाप कर्मों में कुछ नहीं रखा है तब बुद्धि स्वयं पाप कर्म से जीवात्मा को हटाती है। वह समझ जाता है कि पाप हानिकर है। इस प्रकार बुद्धि को भी शान्त करके अगले कर्म में प्रवृत्त होवें।

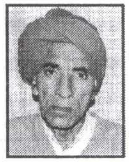

(साभार-सन्ध्या मीमांसा, आचार्य विश्वश्रवा)

सत्यार्थप्रकाश महिमा

सत्यार्थप्रकाश में लिखा, सदा सत्य का सार।
जो सज्जन पढ़ते इसे, होते सुखी अपार॥
ब्रह्मचर्य पालक सदा, दयानन्द ऋषिराज।
लिखा सत्यार्थप्रकाश जो, सब ग्रन्थों का ताज॥
दयानन्द महापुरुष थे, किया श्रेष्ठतम काम।
वैदिक अमृत पान का, पिला गया जो जाम॥
दयानन्द मुनिराज थे, साधक बड़े महान्।
'केवल' विनती यूं करे, पढ़ियो वैदिक नाद॥

वैदिक उजियारा हो जाये

सत्यार्थप्रकाश का पढ़ना, यदि जन-जन में प्यारा हो जाये।
पढ़ करके सभी अमल करें, वैदिक उजियारा हो जाये॥
फूलें फुलवाड़ी वेदों की, जग से अंधियारा मिट जाये।
सत्य धर्म पर अमल करें, स्वर्ग सारा जम बन जाये॥

अमर रहे सत्यार्थप्रकाश

कोटि-कोटि जग की आश, अमर रहे सत्यार्थप्रकाश॥
जीवन ज्योति जगाने वाला, प्रेम पीयूष पिलाने वाला।
सुख-सन्मार्ग सुझाने वाला, पाप भावना का करे विनाश॥
सत्य सनातन धर्म सिखाता, भेद-भाव भ्रम दूर भगाता।
प्रभु पद प्रेम प्रीति उपजाता, दूर भगाता भव-भय त्रास॥
वैदिक नाद बजाया इसने, बुद्धिवाद युग लाया इसने।
ढोंग दुर्ग का ढाया इसने, पाखण्डी हो गये उदास॥
परमेश्वर का गुणगान इसमें, सृष्टिक्रम विज्ञान इसमें।
सत्य असत्य पहचान इसमें, मानवता का पूर्ण विकास॥
आर्यजनों की शान यही है, जीवन धन और प्राण यही है।
धर्म कर्म ईमान यही है, सह न सके इस का उपहास॥
इस की शान न जाने देंगे, इस पै आंच न आने देंगे।
आये जान तो जाने देंगे, 'इन्द्र' न होगा इसका ह्रास॥

यह संसार नाशवान है या नाशरहित?

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम इस संसार में वर्षों से रह रहे हैं। हममें से अधिकांश लोगों ने शायद यह मान लिया है कि यह संसार नाशरहित है और हमेशा ऐसा ही रहेगा। शायद ही कोई मनुष्य होगा जो

कभी इस संसार की नश्वरता के प्रश्न पर विचार करता होगा। हो सकता है कि आर्यसमाज के स्वाध्यायशील बन्धुओं का इस ओर ध्यान जाता होगा, परन्तु अन्य बन्धुओं के मस्तिष्क में यह प्रश्न उठता हो यह अपवाद स्वरूप ही हो सकता है। महर्षि दयानन्द जी ने इस प्रश्न पर विचार किया था और उनका उत्तर है कि यह संसार प्रवाह से अनादि व अनन्त है परन्तु यह संसार उत्पन्न हुआ है और उत्पन्न हुआ प्रत्येक पदार्थ एक दिन नाश को अवश्य ही प्राप्त होता है। हम अपने जीवन को ही लें, यह कुछ वर्ष पूर्व उत्पन्न हुआ जिसे हम जन्म दिवस कहते हैं। कुछ लोग जीवात्मा के माता के गर्भ में आने को भी जन्म दिवस मानते हैं। हम एक शिशु के रूप में जन्म लेते हैं और शैशव अवस्था के बाद बाल्यकाल व किशोरावस्था आती है, युवा होते है, प्रौढावस्था और अन्त में वृद्धावस्था आने के बाद सभी की मृत्यु हो जाती है। इसके थोड़े से अपवाद भी होते हैं। कोई बचपन में तो कोई युवावस्था में ही इस संसार से चल बसते हैं। यह सब प्रारब्ध या उनकी परिस्थितियों के अनुसार होता है। मनुष्य के शरीर की वृद्धि और नाश होने से हम यह जान सकते हैं कि जिस पदार्थ की उत्पत्ति होती है उसका नाश अवश्य होता है। यहां यह भी जानने योग्य है कि नाश का अर्थ अभाव होना नहीं होता है। नाश को प्राप्त होने वाली वस्तु का स्वरूप परिवर्तित होता है न कि उसका अभाव होता है। जल गर्म होने पर भाप बन जाता है। एक प्रकार से जल वा तरल रूप में न होने पर कुछ लोग इसे उसका नाश मान सकते हैं परन्तु विज्ञान का विद्यार्थी जानता है कि गर्मी के कारण जल वाष्प बन गया है जिसे ठण्डा कर पुनः तरल अवस्था के जल में परिवर्तित किया जा सकता है। जल के वाष्प बनने से जल का अभाव नहीं होता है।

सृष्टि की उत्पत्ति हुई है इस तथ्य का अनुमान सृष्टि में विद्यमान ह्रास के सिद्धान्त से भी होता है। हर पदार्थ समय के साथ पुराना होता जाता है और पुराना होने का अर्थ होता है कि वह अपने मूल अस्तित्व में सदैव नहीं रहता। हमारी यह पृथिवी व सूर्य, चन्द्र आदि सभी ग्रह उपग्रह समय के साथ पुराने होते जा रहे हैं। समय के साथ सभी पदार्थों में अनेक विकृतियां भी देखने को मिलती हैं। इस कारण से सभी सृष्ट पदार्थों, ईश्वर व जीवात्मा को छोड़कर, का मूल स्वरूप बदलता जाता है। वह हमेशा अपने मूल स्वरूप में नहीं रहता। खेतों में किसान फसल बोता है। छोटे-छोटे पौधे के रूप में वह उत्पन्न होती है और समय के साथ उसमें वृद्धि होती है। फसल पक जाने पर उसमें वृद्धि का क्रम बन्द हो जाता है। वह उपयोग के लिए तैयार होती है। उसे काटा जाता है और उसका अन्न या भोजन आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है। ऐसा ही परिवर्तन, न्यून व अधिक गति से, प्रायः सभी पदार्थों में होता है। हमारी यह पृथिवी व इसके सभी पदार्थ समय के साथ पुराने हो रहे हैं और इसमें विकृतियां आ रही हैं। हमारा पर्यावरण जैसा शुद्ध व पवित्र होना चाहिये, अब नहीं है। न केवल वायु अपितु जल व अन्य सभी पदार्थ प्रदुषित व विकृति को प्रदान हो रहे हैं। यह एक प्रकार से पदार्थों का स्वरूप परिवर्तन है।

हमारे ज्योतिष के विद्वानों ने बताया है कि इस सृष्टि की कुल आयु एक हजार चतुर्युगी है। एक चतुर्युगी में चार युग सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग होते हैं। कलियुग 4 लाख 32 हजार वर्षों का होता है। इसका दुगुना, तिगुना और चार गुना क्रमशः द्वापर, त्रेता व सतयुग होता है। हमारी इस पृथिवी सहित ब्रह्माण्ड की कुल आयु को सर्ग काल कहते हैं जो कि 4.32 अरब वर्षों के बराबर होता है। एक बार सृष्टि बनने व आरम्भ होने के बाद एक सर्ग काल व्यतीत होने पर इस समस्त सृष्टि वा ब्रह्माण्ड की प्रलय हो जाती है। यह सृष्टि ईश्वर का एक दिन कहलाती है और समान अवधि के प्रलय काल की दृष्टि से एक रात्रि के बराबर होती है। जिस प्रकार से रात्रि के बाद दिन और दिन व्यतीत होने के बाद रात्रि आती है उसी प्रकार से प्रलय के बाद ईश्वर पुनः सृष्टि की रचना करते हैं और फिर यह पूरे सर्ग काल तक विद्यमान रहकर प्रलय को प्राप्त हो जाती है। इसका कारण हमें यह लगता है कि इस अनन्त ब्रह्माण्ड को

ईश्वर ने धारण कर रखा है। प्रलय काल ईश्वर की रात्रि के समान होता है। रात्रि में हमें सुख मिलता है। प्रलय रूपी रात्रि में समस्त जीवों को लम्बे समय तक निद्रा रूपी सुख परमात्मा प्रदान करते हैं और इस अवधि में स्वयं भी जाग्रत अवस्था के समान क्रियाशील नहीं रहते। प्रलय अवस्था में ईश्वर सृष्टि को धारणा नहीं करते, सम्भवत: इसी कारण प्रलय होती है। प्रलय के बाद ईश्वर सृष्टि की पुन: रचना व उसका धारण कर जीवों को उनके कर्मानुसार जन्म आदि देकर सुख व दु:ख का भोग कराते हैं। यह क्रम अनादि काल से चला आ रहा है और हमेशा चलता रहेगा।

सृष्टि का आरम्भ भी है और अन्त भी है। आरम्भ को सृष्टि की उत्पत्ति व अन्त को प्रलय कहा जा सकता है। प्रश्न है कि ईश्वर सृष्टि को उत्पन्न क्यों करता है? इसका उत्तर है कि संसार में तीन अनादि व नित्य पदार्थ हैं। यह तीन पदार्थ ईश्वर, जीव व प्रकृति कहलाते हैं। ईश्वर व जीव चेतन सत्तायें हैं और प्रकृति जड़ व सूक्ष्म सत्ता है। चेतन पदार्थ ज्ञानवान व ज्ञान प्राप्ति में समर्थ होते हैं। यह पदार्थ कर्म व पुरुषार्थ करने में भी समथ व सक्षम होते हैं। ईश्वर एक है और वह निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक है। जीवात्मा संख्या में अनन्त हैं और एकदेशी होने के साथ अल्प ज्ञान सामर्थ्य व कर्म करने वाले हैं। प्रकृति सत्व, रज व तम्र गुणों वाली त्रिगुणात्मक प्रकृति कहलाती है। यह समस्त सूर्य, पृथिवी, चन्द्र व लोक लोकान्तर आदि सृष्टि इस त्रिगुणात्मक प्रकृति के ही विकार हैं जिन्हें सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर ने बनाग्रा है और वही इन सबको धारण कर इनको व्यवस्थित किये हुए है।

परमात्मा ने यह सृष्टि जीवों के सुख के लिए बनाई है। ईश्वर यदि सृष्टि की रचना व पालन न करता तो वह निठल्ला कहलाता। सभी सामर्थ्यवान् लोग अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार पुरुषार्थ व परोपकारादि कर्म किया ही करते हैं और दूसरों के द्वारा उनकी सराहना भी की जाती है। ईश्वर ने भी अपनी सामर्थ्य के साफल्य एवं जीवों के सुखोपभोग तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए इस सृष्टि की रचना की है। संसार में मनुष्य, पशु, पक्षी आदि दो प्रकार की योनियां हैं। एक कर्म भोग योनि व दूसरी भोग योनि। मनुष्य येनि उभय योनि है जिसमें जीवात्मा अपने पूर्व कर्मों के फलों का भोग भी करता है ओर नये कर्म भी करता है।

क्रमश: अगले अंक में.....

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन... पृष्ठ 2 का शेष.....

पहली बार दी गई चुनौती। समाज को पाखण्ड से बाहर निकालने में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वेदों का प्रचार कर उन्होंने युवाओं में नई ऊर्जा का संचार किया। राज्यपाल गंगाप्रसाद जी ने युवाओं का आह्वान किया कि वे समाज को जागरूक कर आगे बढ़ाने का प्रयास करें।

वेदों के समान दूसरा ज्ञान नहीं : डॉ. सत्यपाल

डॉ. सत्यपाल आर्य ने कहा कि वेदों के समान कोई दूसरा ज्ञान नहीं है। वेद किसी धर्म या जातिविशेष के लिए नहीं है बल्कि ये दुनिया के प्रत्येक मानव के जीवन के लिए है। हर किसी को वेदों को पढ़ना चाहिए और उनके दिखाए मार्ग पर चलाना चाहिए। युवाओं को आचार्य बलदेव जी जैसे महापुरुषों के आदर्शों को अपनाने की जरूरत है।

सभागार में कई स्थानों पर लगाई महापुरुषों की प्रतिमाएं, स्वदेशी अपनाने पर जोर

दयानन्दमठ में कार्यक्रम के दौरान संबोधित करते हुए हिमाचल के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने कहा कि आचार्य बलदेव के स्मृति दिवस के अवसर पर हुए आर्य महासम्मेलन को लेकर सभागार में विभिन्न स्थानों पर महापुरुषों की प्रतिमाएं भी लगाई गईं। वहीं मुख्य मंच के नजदीक ही विभिन्न स्टाल व प्रदर्शनी भी लगाई गई। जहाँ आर्यसमाज से सम्बन्धित तमाम पुस्तकों के अलावा ध्वज व यज्ञ से सम्बन्धित वस्तुएं और सामग्री थी। वहीं विभिन्न स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री भी की गई। वहीं कार्यक्रम को लेकर सुरक्षा व्यवस्था भी दुरुस्त नजर आई। जांच के बाद ही पंडाल में प्रवेश करने दिया जा रहा था। इस दौरान तमाम व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई थी और सुरक्षा की दृष्टि से भी हर व्यक्ति पर कड़ी निगरानी रखी जा रही थी।

गर्ल्ज स्कूल का शुभारम्भ

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में एक बड़ा आर्य महासम्मेलन करके लड़कियों के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ग्लोबल स्कूल बनाया गया। कार्यक्रम का संचालन कर रहे श्री उमेद शर्मा, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने कहा कि पूज्य आचार्य बलदेव जी ने सामाजिक बुराइयों को हटाने के साथ-साथ गो-संरक्षण एंव गो-संवर्धन पर बहुत काम किया।

(साभार-दैनिक जागरण, 29.1.2018)

आओ मौत के रहस्य को... पृष्ठ 8 का शेष.....

भारतीय परम्परा में जहाँ ईशभक्ति द्वारा मोक्षप्राप्ति, ईश्वरदर्शन में जीवन की सार्थकता मानी गई है, वहां किसी के काम आने, परोपकार तथा सम्बन्ध के अनुरूप पारस्परिक सम्बन्धों को निभाने को भी जीवन की सफलता कहा जा सकता है क्योंकि हमारे ये सम्बन्ध ईश्वर ने ही जोड़े हैं। अत: इन सम्बन्धों का निभाना ईश्वर की आज्ञा है। जैसे कि शोक के इस अवसर पर बिछुड़ी आत्मा से अपने-अपने सम्बन्ध को ध्यान में रखकर हम अपनी संवेदना प्रकट करने के लिए आए हैं। इस प्रकार सहानुभूति दर्शाने से दोनों ओर सन्तुष्टि होती है। क्योंकि मनुष्य एक विचारशील सामाजिक प्राणी है, तभी तो हम समाज में एक-दूसरे के साथ वर्त कर अपनापन अनुभव करते हैं और यही सामाजिकता है। इसीलिए किसी परिवार के साथ वियोग की वेला में संवेदना दर्शायी जाती है जिससे वियोग विह्वल परिवार अपने आपको अकेला अनुभव न करे। इस प्रकार संवेदना प्रकट करने से परिवार का दु:ख, कष्ट हलका होता है। पारस्परिक संवेदना के साथ इस अवसर पर परम दयालु परमेश्वर से सभी मिलकर सामूहिक प्रार्थना भी करते हैं कि परिवार पर जो नया दायित्व आया है। उसको निभाने की परमपिता प्रभु इस परिवार को धृति-मति-शक्ति दे। सर्वेश्वर बिछुड़ी आत्मा को सद्गति शान्ति दे। इस अवसर पर आए हुए सभी जैसे आज के अपने कर्त्तव्य निभा रहे हैं। ऐसे ही संसारी जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी सर्वशक्तिमान् सभी को अपना-अपना कर्त्तव्य निभाने का सामर्थ देवे।

संपर्क-182, शालीमार नगर, होशियारपुर (पंजाब)

ओ३म् — आमंत्रण पत्र — ओ३म्

वीतराग महात्मा प्रभुआश्रित जी की पुण्य स्मृति के अवसर पर
वैदिक भक्ति साधन आश्रम आर्य नगर, रोहतक में

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

शुक्रवार 16 फरवरी 2018 से रविवार 18 फरवरी 2018 तक

कार्यक्रम

प्रात: 6.30 बजे से 9.30 बजे तक — यज्ञ भजन प्रवचन
सायं 3.00 बजे से 6.00 बजे तक — यज्ञ भजन प्रवचन

यज्ञ ब्रह्मा : **आचार्या नन्दिता शास्त्री,** पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
वेदपाठ व भजन : पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी छात्राओं द्वारा
प्रवचन : **आचार्या नन्दिता शास्त्री, आचार्य नरेन्द्र मैत्रेय**

आप सभी सपरिवार एवं मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

विशेष : आवास तथा भोजन की व्यवस्था आश्रम की ओर से नि:शुल्क होगी। यजमान बनने हेतु धोती/साड़ी साथ लाएं। समय परिवर्तन का अधिकार प्रधान/मंत्री को होगा। पूर्णाहुति 18 फरवरी प्रात: 10.30 बजे होगी।

निवेदक
समस्त अधिकारी एवं ट्रस्टीगण वैदिक भक्ति आश्रम आर्यनगर, रोहतक फोन : 01262-253214, 9416211809, 9899364921, 9810033799

मनुष्य योनि छोड़ते समय... पृष्ठ 6 का शेष.....

हित कर सकूँ। परोपकार की दृष्टि से जो भी कार्य होता है वह अच्छा व शुभ ही होता है जैसे भगवान् कृष्ण व महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन में किया। ऐसे लोग मृत्यु के बाद सीधे मोक्ष में जाते हैं। तीनों गतियों का वर्णन तो मैंने संक्षिप्त में कर दिया। अब मेरा स्वयं का यह विचार है कि मनुष्य की आत्मा जब शरीर को छोड़ती है तो उसी समय ईश्वर की न्यायव्यवस्था उस आत्मा या जीव ने इस मनुष्य शरीर में जितने भी अच्छे व बुरे कर्म किये उसी के आधार पर यह निर्णय कर देती है कि यह आत्मा कितनी नीचे की योनियों में जाकर पुन: मनुष्य योनि में आवेगी। इसका कारण यह है कि मनुष्य योनि ही भोग व कर्म योनि है जिसको अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मों का फल दु:ख के रूप में मिलते हैं। बाकी सब नीचे की योनियां केवल भोग योनियाँ हैं। उनमें किये हुए कर्मों का फल नहीं मिलता। उन योनियों में जितना भोग भोगने के लिए निर्धारित आयु दी है, उसी आयु में उतना ही भोग, भोग कर अगली योनि में चला जाता है। जब पूरे भोग जीव, नीचे की योनियों में भोग लेता है तब वह मनुष्य योनि में पुन: आ जाता है। इसलिए मेरा विचार है कि जीव जब मनुष्य योनि छोड़ता है तभी यह जीव कितनी योनियों के बाद पुन: मनुष्य योनि में आयेगा यह निर्णय हो जाता है। मेरा यह विचार पाठकों को ठीक लगे तब तो ठीक है। यदि ठीक न लगे तो कृपया पत्र-व्यवहार करें।

शोक-समाचार

चौ० सूबेसिंह सेवानिवृत्त एस.डी.एम. एवं पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, निवासी 34 विकास नगर, रोहतक का दिनांक 10 फरवरी 2018 को लगभग 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। हरयाणा के शराबबन्दी आन्दोलन में चौ० विजय कुमार पूर्व उपायुक्त के साथ उन्होंने बहुत कार्य किया। आर्यसमाज के कार्यों में भी वे बढ़-चढ़कर भाग लेते थे।

परमपिता दिवंगत आत्मा को सद्गति देवे तथा उनके परिवार को इस दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उनके निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

—उमेद शर्मा, सभामन्त्री

समाचार-प्रभाग

मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में भजन-प्रवचन का कार्यक्रम

झज्जर, 14 जनवरी। महर्षि दयानन्द शिक्षण केन्द्र झज्जर के तत्त्वावधान में मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य एवं माता धापादेवी की पुण्य स्मृति में यज्ञ-भजन-प्रवचन का कार्यक्रम किया गया जिसकी अध्यक्षता रिटायर्ड प्राचार्य डॉ. एच.एस. यादव ने की। कार्यक्रम में मुख्यवक्ता आचार्य बालेश्वर शास्त्री, रिटायर्ड प्राध्यापक द्वारका प्रसाद एवं वैदिक सत्संग मण्डल समिति झज्जर (रजि०) के अध्यक्ष श्री रमेशचन्द्र वैदिक रहे। यज्ञ के ब्रह्मा पं० जयभगवान आर्य रहे और यजमान महाशय रतीराम दम्पति रहे। मुख्यवक्ता श्री एच.एस. यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि वेदों के अनुसार चलने से ही विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है। वैदिक ज्ञान समस्त मानवता के लिए है। इसमें किसी धर्मविशेष अथवा सम्प्रदाय के लिए ज्ञान नहीं है, बल्कि वेदों का सन्देश सार्वभौम है। इसलिए हमें वेदों में बताए गए रास्ते पर चलना चाहिए। धर्म की आड़ में पाखण्ड फैलाने और व्यभिचार में संलिप्त तथाकथित बाबाओं से बचना चाहिए तभी परिवार में सुख-शान्ति एवं समृद्धि हो सकती है। रिटायर्ड प्राध्यापक श्री द्वारकादास ने मकर संक्रान्ति पर्व के बारे में विस्तृत व्याख्यान दिया जिसमें इस पर्व के महत्त्व के बारे में बताया और कहा कि हमारे सभी पर्व समाज में भाईचारा बढ़ाने का सन्देश देते हैं। आचार्य बालेश्वर शास्त्री प्राध्यापक ने कहा कि हमें अपने धर्म के बारे में सही जानकारी होनी चाहिए। हमें पता होना चाहिए कि धर्म क्या है? अधर्म क्या है? हम सबको धार्मिक होना बहुत जरूरी है, क्योंकि धर्म पर चलने वाला व्यक्ति सत्यवादी, चरित्रवान, विद्वान तथा समदर्शी होता है। इसलिए धर्म पर चलना जरूरी है। इस कार्यक्रम में डॉ. मंगतराम यादव, श्री रमेशचन्द्र वैदिक, पं० जयभगवान, ब्र० कृष्ण, भगवानसिंह, चमनलाल, सूबेदार भरतसिंह आदि ने मधुर भजनों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में लाला प्रकाश आर्य, सूर्य प्रकाश (मन्त्री, कोषाध्यक्ष आर्यसमाज झज्जर), ओमप्रकाश यादव, मुकेश अशोक, धीरज, बुधम, जयवीर, रीना आर्या, सेवा, सुशीला, मूर्ति, कविता, सोनिया, विधा, पुष्पमा, सविता, प्रेम, मेहली आदि उपस्थित थे। —सुभाष आर्य, झज्जर

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

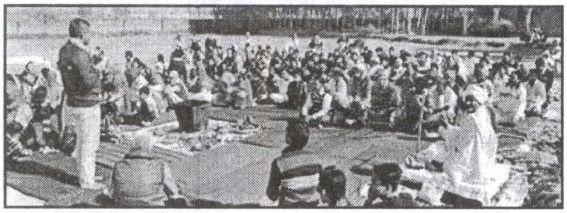

दिनांक 14 जनवरी 2018 को पतञ्जलि योगाश्रम भऊ रोहतक का वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में प्रथम बृहद् यज्ञ हुआ। दम्पति यजमानों ने श्रद्धा से यज्ञ सम्पन्न किया। श्री सत्यपाल मधुर व श्री सुशील आर्य जी के मधुर भजनोपदेशक हुए। सभा का वेदप्रचार रथ भी कार्यक्रम में पहुँचा।

शोक-सन्देश

बड़े दुःख के साथ सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज सेका जिला महेन्द्रगढ़ के प्रधान श्री मोहरसिंह आर्य का देहान्त दिनांक 22 जनवरी 2018 को हो गया। उनकी अन्त्येष्टि क्रिया पूर्ण वैदिक रीति से की गई। महात्मा हंसमुनि के निर्देशन में वेदी तैयार की गई तथा आचार्य अभयदेव जी गुरुकुल खानपुर व गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदमन्त्रों द्वारा आहुति दी गई जिसमें तीन टीन देशी घी व पचास किलोग्राम हवन सामग्री का प्रयोग किया गया। अन्त में महात्मा जीवानन्द 'नैष्ठिक' पूर्व प्रधान वेदप्रचार मण्डल जिला रेवाड़ी द्वारा उपस्थित जनों को आत्मा और परमात्मा पर उपदेश दिया। घर आकर महात्मा हंसमुनि व रोशनलाल आर्य ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। वे अपने पीछे पत्नी व तीन बेटों व बेटियों सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गये। बड़ा बेटा सत्यवीर दिल्ली पुलिस में एसआई है, दूसरा दलीपसिंह हरियाणा पुलिस से एसआई के पद से सेवानिवृत्त है। तीसरा बेटा मुखत्यार सिंह हरयाणा में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत है। पूरा परिवार आर्यसमाज के सिद्धान्तों का पालन करता है। घर में दैनिक यज्ञ होता रहा है, जिसकी भविष्य में जिम्मेदारी श्री दलीपसिंह जी को दी गई है। इनकी श्रद्धांजलि सभा दो फरवरी को थी।

—साथी श्री रोशनलाल आर्य पूर्व प्रधान
वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ व अन्तरंग सदस्य,
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, मो० 9467718363

वेदान्त दर्शन का अध्यापन

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक में नवम्बर 2015 से नियमित रूप से प्रातः यज्ञ, वेदपाठ, वेदप्रवचन, कक्षा के रूप में क्रियात्मक योग, संस्कृत भाषा के साथ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व बृहदारण्यकोपनिषद् का अध्यापन कराया जा रहा है। आगे फाल्गुन कृ० 10/2014 तदनुसार 21 फरवरी, 2018 से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक द्वारा स्वामी ब्रह्ममुनि जी कृत संस्कृत भाष्य सहित वेदान्त दर्शन का अध्यापन कराया जायेगा। स्वस्थ, समर्थ, अनुशासनप्रिय, विद्या इच्छुक विद्यार्थी तथा नवीन विद्यार्थी प्रवेश के लिए निवेदन व संपर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता-केवल ब्रह्मचारी (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष से अधिक हो।

शैक्षणिक योग्यता-न्यूनतम 12वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता)

विशेषताएं-वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ-साथ 11 उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेदभाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक, वैराग्य, मनोनियंत्रण, यम-नियम, ध्यान-समाधि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए 4-5 घण्टे मौन पालन का अवसर रहेगा।

सुविधाएं-प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित आवास-भोजन, बिस्तर-वस्त्र, घी-दूध, फल-पुस्तकादि वस्तुएं निःशुल्क प्राप्त होंगी।

सम्पर्क हेतु पता-

आचार्य जी, दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक (हरयाणा) 124001

चलभाष-

आचार्य नवानन्द जी आर्य-7027026175

स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक-7027026175

श्री निगममुनि जी-9355674547

शोक-समाचार

श्री जगदीश चन्द्र शास्त्री, स्नातक गुरुकुल भैंसवाल, गांव व पो० कुराड़ जिला पानीपत का दिनांक 18.01.2018 को स्वर्गवास हो गया। उनकी उम्र 74 वर्ष थी। वे अपने पीछे 4 पुत्र, 6 पौत्री, 6 पौत्र छोड़कर गए हैं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं परिवार को इस विकट दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

स्त्री आर्यसमाज मुरादपुर टेकणा जिला रोहतक का वार्षिकोत्सव दिनांक 4 फरवरी, 2018 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ग्राम तथा आसपास के ग्रामों से महिलाएं तथा आर्यसमाज के कर्मठ व्यक्ति पहुँचे। आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री सत्यपाल मधुर व श्री महेन्द्रसिंह आर्य के प्रेरणादायक भजन हुए। इन्होंने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, दहेजप्रथा तथा कुरीतियों के विरुद्ध भजन सुनाए। ग्राम मुरादपुर टेकणा में खुशी का माहौल रहा। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के प्रधान मा० रामपाल आर्य, गुरुकुल बहुअकबरपुर के संचालक व वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र आर्य, जिला परिषद् रोहतक के चेयरमैन श्री बलराज कुण्डू, श्री राजेन्द्र आर्य मोखरा, सरपंच मोखरा आदि मौजूद व्यक्तियों ने अपने विचार रखे। आर्यसमाज की तरफ से बाक्सिंग में विश्वविजेता श्री प्रदीप सांगवान मुरादपुर टेकणा को 11,000 रुपये से सम्मानित किया गया तथा इसके अतिरिक्त दो खिलाड़ी श्री सोनू व रविन्द्र को भी भारत में मैडल लेने पर स्वागत किया गया। इसके अतिरिक्त गरीब बेसहारा महिलाओं व पुरुषों को लगभग 200 कम्बल वितरित किये गये। अन्त सभी को भोजन करवाया गया।

-वेदवती आर्या, प्रधान, स्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	वैदिक साधन आश्रम, गोरड़ (सोनीपत)	15 से 18 फर० 2018
2.	वैदिक भक्ति साधन आश्रम (रोहतक)	16 से 18 फर० 2018
2.	गुरुकुल झज्जर (वार्षिकोत्सव)	17 से 18 फर० 2018
3.	आर्यसमाज घरोण्डा जिला करनाल	22 से 25 फर० 2018
4.	आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल, पलवल	23 से 25 फर० 2018
5.	आर्यसमाज टिटोली (एकता मंच) रोहतक	24 से 25 फर० 2018

-रमेश आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल का फूल भेंट करके स्वागत करते हुए मा० रामपाल आर्य, सुमित्रा आर्या, विनय आर्य व अन्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में श्री धर्मपाल आर्य का फूल भेंट करके स्वागत करते हुए मा० रामपाल आर्य, सुमित्रा आर्या, रमेश आर्य व अन्य।

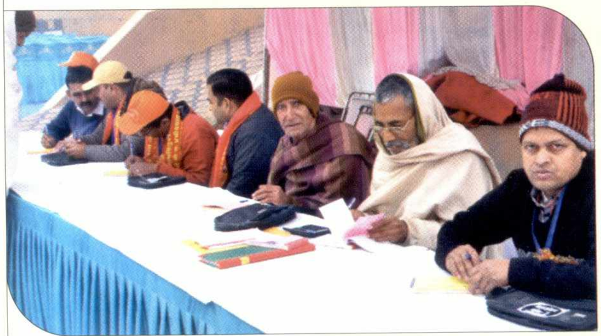

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में दान प्राप्त करते हुए श्री ओमप्रकाश शास्त्री, रघुवरदत्त आर्य, मा० मेघराज आर्य व अन्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में भजन प्रस्तुत करते हुए श्री कुलदीप भास्कर व श्री सत्यपाल मधुर।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में भोजन करते हुए आचार्य देवव्रत जी, स्वामी देवव्रत आचार्य, श्री उमेद सिंह शर्मा, श्री राधाकृष्ण आर्य व अन्य।

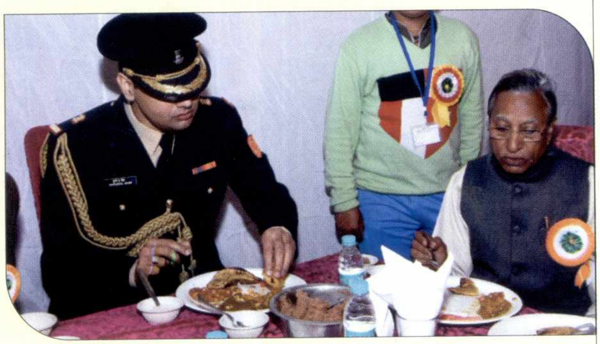

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में भोजन करते हुए श्री गंगाप्रसाद जी व अन्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में भोजन करते हुए आचार्य देवव्रत जी साथ में हैं निगम मुनि जी व उनकी टीम के सदस्य।

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में भोजन करते हुए आर्यजन।

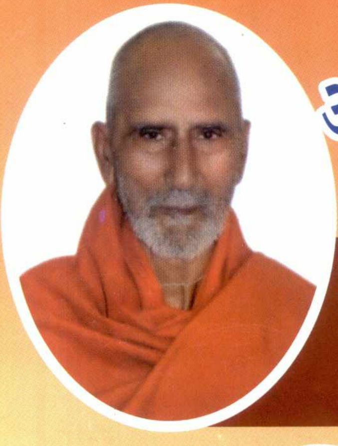

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

के तत्त्वावधान में आचार्य बलदेव स्मृति दिवस पर आयोजित

स्वामी दयानन्द सरस्वती

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक - 28 जनवरी 2018

को सफल बनाने के लिए आप सभी का हार्दिक धन्यवाद

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

प्रेषक :
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक
हरियाणा, 124001

श्री ....

पता ....ड,

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक उमेद शर्मा ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक उमेद शर्मा